ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15 अंक-9 अगस्त-I, 2014 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹ 8.00

महिलाएं अपने आप में सर्वसमर्थ

त्रिदिवसीय सम्मेलन में विभिन्न विषयों पर खुले व चर्चा सत्र का आयोजन किया गया

ज्ञानसरोवर-माउण्ट आबू। हिंसामुक्त समाज निर्माण में भागीदारी सुनिश्चित करने में महिलाओं को प्राथमिकता से आगे जाने की नितांत आवश्यकता है। महिलाएं अपने आप में सर्वसमर्थ हैं, उन्हें किसी बैसाखी की आवश्यकता नहीं है।

उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ के महिला सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन में गुजरात महिला आयोग की अध्यक्षा लीला बेन अनकोटिया ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि महिलाओं को अपने शक्ति-स्वरूप को पहचान कर पारिवारिक व सामाजिक रिश्तों से समाप्त होते मूल्यों को फिर से विकसित करने में आगे जाना चाहिए।

ज्ञानसरोवर निदेशिका डॉ.निर्मला ने कहा कि नैतिक मूल्यों का विकास करने में महिलाओं को अपना मानसिक धरातल आध्यात्मिकता से भरपूर रखना चाहिए। जीवन व्यवहार को संतुष्टता व प्रसन्नता से भरपूर रखने के लिए मेडिटेशन का अभ्यास अति आवश्यक है। पंजाब महिला आयोग अध्यक्षा श्रीमती परमजीत कौर ने कहा कि समाज को सफलता की मंजिल पर पहुँचाने एवं महान समाज की सुदृढ़ नींव डालने में महिलाएं सक्षम हैं, बशर्ते वे अपने अंतर्निहित शक्तियों को जागृत कर कार्य में लगाएं। ब्रह्माकुमारी संगठन द्वारा विश्व भर में किए जा रहे सार्थक प्रयास सराहनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी हैं।

पद्मविभूषण से सम्मानित प्रसिद्ध नृत्यांगना डॉ.सोनल मानसिंह ने कहा कि किसी हथियार से वार करने से सशक्तिकरण नहीं लाया जा सकता, उसके लिए शिक्षा व संस्कार सर्वाधिक अचूक हथियार हैं। मूल्यों से संपन्न शिक्षा किसी भी बुराई को धराशायी करने में सर्वसमर्थ है।

प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा ब्र.कु. चक्रधारी ने कहा कि वर्तमान परिवेश में बच्चे माँ-बाप के आचरण से ज़्यादा

ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए सोनल मानसिंह, ब्र.कु. डॉ. निर्मला, ब्र.कु.चक्रधारी, परमजीत कौर, लीना अनकोटिया, मेघा शिंदे, ब्र.कु. डॉ.सविता तथा अन्य।

सीखते हैं शिक्षा से कम। जितना ज़ोर बच्चों पर शिक्षा की डिग्री लेने के लिए लगाया जाता है, उतना ही संस्कारों को श्रेष्ठ बनाने के लिए महत्व देना चाहिए। श्रीमती मेधा शिंदे,मुख्य अभियंता,मुंबई ने कहा कि घर के माहौल को श्रेष्ठ बनाने के लिए महिलाओं को व्यर्थ की बातों को छोड़ जनहित के लिए अपनी आंतरिक क्षमताओं को बढ़ाने का मनन-चिंतन करना चाहिए। प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका डॉ.सविता ने कार्यक्रम का संचालन किया। त्रिदिवसीय समेलन में कई विषयों पर चर्चा सत्र का आयोजन किया गया।

राजयोग से स्वयं का निरीक्षण कर आत्मिक शक्तियों का विकास करें

ओ.आर.सी.। हम सभी ओम् शान्ति बोलते हैं लेकिन ओम् अ, उ, म, तीन अक्षरों का मिलन है, जिसमें अ का अर्थ आचरण, उ अर्थात् उच्चारण और म माना मेरा मन, जब हम इन तीनों शब्दों के अर्थ स्वरुप में टिककर ओम् शान्ति कहते हैं तभी शान्ति की सच्ची अनुभूति होती है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'स्प्रिच्युअल टूल्स टू मैनेज स्ट्रेस' विषय पर पुलिस कर्मियों के लिए आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. आशा,निदेशिका ओ.आर.सी. ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि तनावमुक्त रहने के लिए सबसे पहले ज़रूरी है कि जो बात जैसी है हम उसको वैसा ही समझें, कई बार हमें अपने व्यक्तिगत झुकाव व एडिक्शन के कारण वो चीज़ वैसी नज़र नही आती।

दूसरा, बाहर की परिस्थितियां हमें अपनी शक्ति से ज्यादा शक्तिशाली नज़र आती हैं। इसके लिए जरुरी है कि हम स्वयं के भीतर जाकर अपनी आंतरिक क्षमताओं को पहचानें, उसके लिए एकाग्रता की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। राजयोग हमें सिखाता है कि स्वयं का निरीक्षण कर कैसे हम अपनी आत्मिक शक्तियों का विकास करें। उन्होंने कहा कि हम तभी दूसरों की सुरक्षा कर सकते हैं, जब स्वयं सुरक्षित हों। स्वयं की सुरक्षा केवल हथियारों से नहीं बल्कि इमानदारी, निर्भयता, सद्भावना एवं कर्तव्यनिष्ठता जैसे गुणों को अपने जीवन में लाने से होती है।

डॉ.बी.एन.रमेश,आइ.जी.,सी.आर.पी.एफ., गुड़गाँव ने कहा कि पुलिस की समाज में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है, तभी लोग आपके पास तभी लोग आते हैं इसलिए हमें लोगों की निष्ठा को समझकर जनहित में कार्य करना है। उन्होंने कहा कि पुलिस का ये दायित्व है कि वो किसी छोटे अपराधी को बहुत बड़ा अपराधी न बनने दें। उन्होंने आगे कहा कि मनुष्य जैसे कर्म करता एवं जैसा भोजन खाता है वैसे ही बन जाता हे। मैं तीन-चार महीने माउण्ट आबू में रहा ब्रह्माकुमारीज़ में कई बार गया, इनके रसोईघर में भोजन जितनी पवित्रता से बनाया जाता है, ये उसी का परिणाम है कि यहाँ का वातावरण इतना आध्यात्मिक एवं शक्तिशाली है।

संस्था के मुख्य सचिव ब्र.कु बृजमोहन ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ का मुख्य उद्देश्य ही है ह्यूमन बिंग्स को बेस्ट ह्यूमन बिंग्स बनाना।

उन्होंने कहा कि तनाव के बहुत से कारण हैं, लेकिन उसका निवारण हमारे मन के अन्दर ही है । परिस्थितियां तो बाहर से आती हैं, परन्तु यदि हम अपने मन को सकारात्मक चिन्तन द्वारा शक्तिशाली बना दें, तो परिस्थितियों का सामना करना आसान हो जाता है। उन्होंने कहा कि इस दुनिया में कोई भी चीज़ अपने लिए नहीं बनी है, प्रकृति भी हमें देती है। हमारे जीवन का लक्ष्य भी यही हो कि पहले देना है, जो हम देते है, वो- शेष पेज 7 पर

ओ.आर. सी.। कैंडल लाइटिंग करते हुए रेवाड़ी के ए.सी.पी., ब्र.कु. शुक्ला, ब्र.कु. नरेन्द्र, ब्र.कु.बृजमोहन, डॉ. बी.रमेश एवं गुड़गांव की ए.सी.पी.।